IDN – IN DEPTH NEWS
Analysis That Matters

पगवॉश और जर्मनी परमाणु मुक्त विश्व के लिए प्रयास करते हैं

सौजन्य: पगवॉश कॉन्फ्रेंस

जमशेद बरुआ द्वारा
आईडीएन-इनडेप्थन्यूज़ रिपोर्ट

बर्लिन (आईडीएन) - परमाणु निशस्त्रीकरण ने **2011** में दूसरी बार बर्लिन में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का ध्यान आकर्षित किया है, जो वैश्विक सुरक्षा के लिए भारी खतरा बने हज़ारों परमाणु हथियारों से दुनिया को मुक्त करने की दिशा में एक कदम साबित हो सकता है।

जिस दिन जर्मनी ने **1** जुलाई को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता ग्रहण की, उसी दिन **43** देशों के करीब **300** वर्तमान और पूर्व नीति निर्माताओं और विशेषज्ञों ने 'परमाणु निशस्त्रीकरण और संघर्ष समाधान में यूरोपीय योगदान' विषय पर विज्ञान एवं वैश्विक मामलों पर **59**वां पगवॉश सम्मेलन शुरू किया जिसमें नाटो-रूस संबंधों पर केंद्रित दिन-भर की विशेष परिचर्चा भी थी।

विभिन्न महाद्वीपों के **10** गैर-परमाणु राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों का पहला सम्मेलन अप्रैल में बर्लिन में जर्मन विदेश मंत्री गाइडो वेस्टरवेल की पहल पर हुआ था।

अपने 'बर्लिन वक्तव्य' में आस्ट्रेलिया, कनाडा, चीले, जर्मनी, जापान, मेक्सिको, नीदरलैंड, पोलैंड, तुर्की और संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मंत्रियों ने मध्य पूर्व में परमाणु हथियारों और जनसंहार के अन्य सभी हथियारों से मुक्त क्षेत्र के निर्माण को प्रोत्साहित करने पर बल दिया जो कि (न्यूयार्क में मई) **2010** में एनपीटी समीक्षा सम्मेलन में तय किए गए **2012** के विशेष सम्मेलन के आयोजन की लंबित आवश्यकताओं से भी मेल खाता है।"

वेस्टरवेल ने पगवॉश सम्मेलन के भागीदारों को बताया कि यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि जर्मन सरकार परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व के लिए प्रयासरत है। भागीदारों में प्रमुख शस्त्र वार्ताकार रूसी विदेश उप मंत्री सर्गेई रिबाकोव और अमेरिकी अंडर सेक्रेटरी रोज़ गॉटमोएलर शामिल थे, जिन्होंने परमाणु कटौती के अन्य कदमों की चर्चा की।

विश्व भर से आये अन्य भागीदादरों में आठ वर्तमान विदेश मंत्री, चार पूर्व खुफिया प्रमुख, अनेक वर्तमान संसद सदस्य तथा प्रमुख क्षेत्रों की अन्य अग्रणी शख्सियतें शामिल थीं।

जर्मन विदेश मंत्री ने उनसे कहा, "नाटो में, हम रूस के साथ अगली निशस्त्रीकरण वार्ताओं में उप-रणनीतिक परमाणु शस्त्रों को शामिल करना चाहते हैं। परमाणु खतरे से मुक्त विश्व, ग्लोबल ज़ीरो, हमारा दूरगामी लक्ष्य है। और हम हमेशा इन प्रयासों को वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में रखकर देखेंगे जिसमें पारंपरिक हथियारों में कमी लाना भी शामिल है।"

अक्टूबर **2009** में जर्मनी की कन्ज़र्वेटिव-लिबरल गठबंधन सरकार में विदेश मंत्री नियुक्त जाने से पहले ही, वेस्टरवेल ने देश और विदेश - दोनों जगह परमाणु निशस्त्रीकरण को अपना प्रमुख लक्ष्य बना लिया था। देश में इसका अर्थ था जर्मन भूभाग पर मौजूद करीब **20** परमाणु हथियारों को खत्म करना, जिन्हें बीस वर्ष पहले बर्लिन की दीवार के ढहने, शीत युद्ध की समाप्ति और जर्मनी के फिर से एकीकरण के बावजूद अमेरिका ने बनाये रखा है। विदेश में इसका अर्थ था एक परमाणु हथियार मुक्त विश्व की ओर बढ़ना जिसके लिए प्रयास करने का संकल्प राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अप्रैल **2009** में प्राग में अपने प्रसिद्ध भाषण में व्यक्त किया था।

मानवता के लिए खतरा

वेस्टरवेल ने कहा कि केवल तानाशाह सरकारों के हाथों में ही परमाणु हथियार मानवता के लिए खतरा नहीं होते। उन्होंने चेतावनी दी, "लोकतंत्रात्मक सत्ताओं के हाथों में भी इस बात की गारंटी नहीं की जा सकती कि परमाणु हथियार दुरुपयोग या लापरवाही से सुरक्षित रहेंगे।"

तानाशाहों के नियंत्रण में परमाणु हथियारों के संभावित खतरे की चर्चा करते हुए जर्मन विदेश मंत्री ने कहा: "जब निरंकुश सत्ताएं परमाणु हथियारों पर नियंत्रण पाना चाहती हैं तो वे ज़्यादा चिंताजनक हो जाती हैं। ईरान और उत्तर कोरिया इसके सबसे प्रमुख उदाहरण हैं। लेकिन उन्हें व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए।"

न्यूयार्क में परमाणु अप्रसार पर **2010** में हुए सम्मेलन में बनी सहमति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा: "दस वर्ष के ठहराव के बाद, इस नए दशक में निशस्त्रीकरण की प्रक्रिया ठोस ढंग से शुरू हुई है। क्लस्टर म्युनिशन्स पर संधि पिछली गर्मियों में लागू हो गई। नाटो ने परमाणु हथियार मुक्त विश्व के लक्ष्य को अपनी नई रणनीति का भाग बनाया है। अमेरिका और रूस ने लंबी दूरी के परमाणु हथियारों में कटौती पर एक नई 'स्टार्ट' संधि पर हस्ताक्षर किए हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "यह विशेषज्ञों के रूप में केवल आपके लिए अच्छी खबर नहीं है। यह मानवजाति के लिए शानदार खबर है। निशस्त्रीकरण मावनता के लिए उतना ही महत्वपूर्ण काम है जितना कि जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करना।"

वेस्टरवेल ने आश्वस्त करते हुए कहा, "शांति और सुरक्षा के प्रति हमारी नीति की जड़ें संयुक्त राष्ट्र में गहरी जमी हैं। सशक्त अंतर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित सशक्त संयुक्त राष्ट्र के भीतर सशक्त यूरोप ही वैश्विक चुनौतियों का जवाब है। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और वैधता की बुनियाद के रूप में अपनी विश्वसनीयता बनाये रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र को **21**वीं शताब्दी की वास्तविकताओं के अनुसार स्वयं को ढालना होगा।"

उन्होंने कहा कि अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और एशिया का सुरक्षा परिषद में उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। वे सुरक्षा परिषद का विस्तार करने की 'जी**4**' -- जापान, जर्मनी,भारत और ब्राज़ील -- राष्ट्रों की पहल की

ओर इशारा कर रहे थे, जिसमें अक्सर दक्षिण अफ्रीका का उल्लेख भी पांचवें उम्मीदवार के तौर पर किया जाता है।

'नाटो-रूस संबंधों में परमाणु हथियारों की भूमिका कम करने' पर **30** जून को हुई परिचर्चा को संबोधित करते हुए वेस्टरवेल के उप मंत्री, वर्नर होयर ने कहा, "हमारा संयुक्त राजनीतिक लक्ष्य -- परमाणु हथियारों में और कटौती -- केवल संवाद और पारस्परिक विश्वास को बढ़ाने के सहयोगात्मक तौर-तरीकों से ही हासिल किया जा सकता है।"

उन्होंने कहा कि **2010** शस्त्र नियंत्रण के लिए एक अच्छा वर्ष था। वे **10** वर्ष के गतिरोध के बाद एनपीटी समीक्षा सम्मेलन में हुई सहमति, नई स्टार्ट पर हस्ताक्षर और नाटो की नई रणनीतिक अवधारणा को अपनाये जाने की चर्चा कर रहे थे।

होयर ने कहा, "फिर भी हम अपनी उपलब्धियों पर संतुष्ट होकर बैठ नहीं सकते। हमें अब खुले मुद्दोंपर ध्यान देना है। 'नाटो-रूस संबंधों में ठोस समस्याओं को तर्कों से दूर नहीं किया जा सकता। इसलिए स्पष्ट रूप से यह बताना ज़रूरी है कि समस्याएं क्या हैं, और उपयुक्त समाधान ढूंढने का प्रयास करना है।"
नाटो-रूस 'समस्याएं'

जिन "समस्याओं" के समाधान की आवश्यकता है वे परमाणु हथियारों में कटौती, पारंपरिक शस्त्र नियंत्रण में तेजी लाने, और इस बात से संबंधित हैं कि एक ऐसी मिसाइल प्रतिरक्षा प्रणाली कैसेविकसित की जाये जिससे नाटो और रूस दोनों लाभान्वित हों।

होयर ने कहा कि लिस्बन शिखर सम्मेलन में अपनाई गई नई रणनीतिक अवधारणा यूरोप में रखे गये परमाणु हथियारों में और अधिक कटौती करने की स्थितियां तैयार करने के लिए नाटो की इच्छा को प्रकट करती है। साथ ही, यह रूस के पास मौजूद हथियारों के अधिक बड़े जखीरे के साथ विषमता पर ध्यान देने की आवश्यकता भी बताती है।

उन्होंने अफसोस ज़ाहिर करते हुए कहा, "दुर्भाग्यवश, पिछले महीनों में आधिकारिक रूसी वक्तव्यों में यह स्पष्ट कहा गया है कि अपने उप-रणनीतिक परमाणु शस्त्रागार के विषय पर चर्चा करने में मास्को की ज़्यादा दिलचस्पी नहीं है। यह इंकार हमें कम से कम भविष्य में कटौती की प्रक्रिया शुरू करने के ठोस प्रस्तावों पर चर्चा करने में आड़े नहीं आना चाहिए।"

उन्होंने कहा कि एक सुझाव यह हो सकता है कि **1991/92** के तथाकथित अमेरिका-रूस राष्ट्रपति पहलकदमियों को फिर से बहाल किया जाए। उन दिनों के बाद से, गैर-रणनीतिक हथियार शस्त्र नियंत्रण प्रयासों का अंग नहीं रहे हैं। हम जानते हैं कि नई स्टार्ट फॉलो-ऑन प्रक्रिया में उन पर ध्यान देना एक जटिल और चुनौतीपूर्ण मुद्दा होगा -- राजनीतिक और तकनीकी दोनों पहलुओं से।

होयर ने कहा, "प्रस्थान बिंदु के तौर पर हम पारदर्शिता सुधारने और परस्पर विश्वास बढ़ाने का लक्ष्य लेकर चल सकते हैं। **1991/92** की वचनबद्धताओं को क्रियान्वित करना कभी भी किसी जवाबदेही या सत्यापन के अधीन नहीं रहा है, जिससे इन हथियारों पर फिर से बातचीत की राह में अतिरिक्त बाधा आ जाती है। लेकिन इसे हमें शुरुआत करने से रोकना नहीं चाहिए।"

पगवॉश

सम्मेलन के महत्व पर बल देते हुए, पगवॉश के अध्यक्ष और संयुक्त राष्ट्र में निशस्त्रीकरण के लिए उप महासचिव, जयंत धनपाल ने कहा: "पगवॉश परमाणु हथियारों का महत्व कम करने पर बल देता है, और परमाणु निशस्त्रीकरण को बढ़ावा देता है।"

सम्मेलन से जुड़े एक स्रोत ने अतीत की चर्चा करते हुए याद किया कि पहला ऐतिहासिक पगवॉश सम्मेलन शीत युद्ध के शीर्ष काल में पगवॉश, नोवा स्कॉटिया, कनाडा में हुआ था, जिसमें राजनीतिक बंटवारों से परे हटकर जुटे वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने समाज के सामने मौजूद परमाणु खतरों को कम करने के तरीकों पर सहयोगपूर्ण माहौल में चर्चा की। यह बैठक **1955** में जारी रसेल-आइंस्टीन घोषणापत्र का परिणाम थी। इस घोषणापत्र में अपना नाम जोड़ना अल्बर्ट आइंस्टीन के जीवन का अंतिम सार्वजनिक कार्य था।

पगवॉश सम्मेलन का महत्व तब पहचाना गया जब पगवॉश और उसके एक संस्थापक, जोसेफ रॉटब्लाट को "अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में परमाणु हथियारों की भूमिका कम करने और, दीर्घकाल में, ऐसे हथियारों को समाप्त करने के उनके प्रयासों' के लिए **1995** में संयुक्त रूप से नोबल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया।" **(आईडीएन-इनडेप्थन्यूज़/05.07.2011)**

2011 IDN-InDepthNews | Analysis That Matters

संबंधित आईडीएन लेख:
http://www.indepthnews.net/area2.php?key=ARMS

ट्विटर और फेसबुक पर हमें फॉलो करें:
http://twitter.com/InDepthNews
http://www.facebook.com/pages/IDN-InDepthNews/207395499271390?sk=wall

बाहरी लिंक:
http://www.auswaertiges-amt.de
http://www.tehrantimes.com/Index_view.asp?code=243434
http://www.pugwash.org/reports/pic/59/general_information.htm